डॉ॰ नीलाम्बर चौधरी महाविद्यालय परिसर में बिहार विधान परिषद् के पूर्व सदस्य डॉ॰ नीलाम्बर चौधरी की प्रतिमा के अनावरण–समारोह में बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–03 जनवरी, 2017, समय–पूर्वा॰–11:00 बजे स्थान–बेनीपट्टी, मधुबनी)

बिहार विधान परिषद् के पूर्व सदस्य स्व॰ नीलाम्बर चौधरी की प्रतिमा के अनावरण– समारोह में प्रमुख रूप से उपस्थित राज्य के उप–मुख्यमंत्री श्री तेजस्वी प्रसाद यादव जी, वित्त मंत्री श्री अब्दुल बारी सिद्दीकी जी, शिक्षा मंत्री श्री अशोक चौधरी जी, पशु व मत्स्य संसाधन मंत्री श्री अवधेश कुमार सिंह जी, राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री डॉ॰ मदन मोहन झा जी, विधान पार्षद डॉ॰ दिलीप कुमार चौधरी जी, महाविद्यालय के प्राचार्य श्री भवानन्द झा जी, महाविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण, विद्यार्थीगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों, सज्जनों!!

राज्य के पूर्व विधान पार्षद एवं सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ॰ नीलाम्बर चौधरी जी के नाम पर स्थापित इस महाविद्यालय में उनकी प्रतिमा का अनावरण कर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। मित्रों, समाज उस हरेक इंसान का ऋणी होता है, जो उसके व्यापक हित में अपना योगदान समर्पित करता है। मुझे बताया गया है कि डॉ॰ नीलाम्बर चौधरी जी एक ऐसे विद्वान प्राध्यापक और दूरदर्शी नेता रहे हैं, जिन्होंने समाज के हर वर्ग के उत्थान और विकास के लिए कई महत्त्वपूर्ण कार्य किये। समाज के अभिवंचित और कमजोर वर्गों तथा महिलाओं में शिक्षा के व्यापक प्रसार को लेकर वे हमेशा सक्रिय रहे। उनकी सोच थी कि शिक्षा के माध्यम से ही समाज को जागृत किया जा सकता है। उनका विश्वास था कि समाज की अधिकांश समस्याओं का निराकरण शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है। यही कारण है कि उन्होंने बेनीपट्टी में ही दो महाविद्यालयों–एक डॉ॰ नीलाम्बर चौधरी महाविद्यालय तथा दूसरे सूर्यशरी चन्द्रमुखी महिला महाविद्यालय की स्थापना करवाई। मुझे बताया

गया है कि मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर और बेगूसराय जिलों के कई विद्यालयों और महाविद्यालयों के वे प्रमुख संस्थापक रहे हैं। बहुमुखी प्रतिभा और सौम्य व्यक्तित्व की बदौलत विभिन्न राजनीतिक दलों में भी उनके कई मित्र और प्रशंसक रहे हैं। इन सबसे ऊपर अपनी समाज–सेवा और विद्वता के कारण, वे सम्पूर्ण मिथिलांचल के एक अत्यन्त लोकप्रिय शिक्षक नेता के रूप में बराबर सबके आदरणीय बने रहे। मैं आज उनकी प्रतिमा को लोकार्पित कर उनकी स्मृति को सादर नमन करता हूँ।

प्यारे विद्यार्थियों, बिहार राज्य अपनी अनुपम ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासतों के कारण पूरी दुनिया में विख्यात है। उसमें भी विशेषतः बिहार के मिथिलांचल की पावन भूमि, जो विदेहराज जनक और माँ जानकी की जन्मभूमि है, शिक्षा, संस्कृति, धर्म, तपस्या और सदाचार की सारस्वत भूमि है। पंडित वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य, पक्षधर मिश्र, चण्डेश्वर जी, पंडित मंडन मिश्र, विदूषी भारती, महान त्यागी महाराजाधिराज सर (डॉ॰) कामेश्वर सिंह, कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर', जनकवि नागार्जुन, सर गंगानाथ झा एवं डॉ॰ अमरनाथ झा की समृद्ध परम्परा वाली मिथिला की वसुधा पर बेनीपट्टी में स्थापित इस शिक्षण संस्थान में शिक्षा के समग्र विकास के सार्थक प्रयत्न हो रहे हैं और उससे हजारों की संख्या में प्रतिवर्ष विद्यार्थी भी लाभान्वित हो रहे हैं ऐसा मुझे विश्वास है। महाविद्यालय परिसर में सिर्फ आधारभूत संरचनाओं का विकास ही सबकुछ नही होता। विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति यदि ललक हो, अनुशासन का भाव हो और शिक्षकों से पर्याप्त ज्ञानार्जन की भूख हो, तो उस शिक्षण–संस्थान के विद्यार्थी अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं। मित्रों, शिक्षा का उद्देश्य रोजगार हासिल करना और अपने जीवन के लिए सिर्फ सुख–सुविधाएँ अर्जित करना भर नही है। मनुष्य, शिक्षा और संस्कार समाज और राष्ट्र के व्यापक हित–चिन्तन के लिए

ग्रहण करता है। 'भारतीय संविधान', जिसे हम सभी अपने जीवन के नियमन का एक महान मर्यादा और प्रेरणा–ग्रन्थ मानते हैं, के प्रमुख रचयिता डॉ॰ अम्बेदकर जी का कथन है कि –''शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं को प्रबुद्ध बनाकर सामाजिक शक्तियों को संगठित कर सकता है और अन्याय, शोषण एवं बुराईयों का अंत करने में सहायक है। शिक्षा के जरिये ही मनुष्य आंतरिक और बाह्य गुलामी से लड़ सकता है और यही उसे व्यक्तिगत एवं सामाजिक मुक्ति भी दिला सकती है। मौजूदा शिक्षा व्यवस्था में जीवन और जगत के हर क्षेत्र में पूँजी और टेक्नोलॉजी का हस्तक्षेप बढ़ा है, लेकिन सामाजिक न्याय और लोक–कल्याण के लिए स्पेस कम हुआ है। यह शिक्षा पैसा कमाने वाली मशीनें और सूचनाओं का बोझ ढ़ोने वाली युवा पीढ़ी तैयार कर रही है, लेकिन सृजनशील एवं संवेदनशील मनुष्य बना पाने में नाकामयाब रही है।'' राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भी समाज के अभिवंचित वर्ग तक शिक्षा की रोशनी पहुँचाने पर बराबर जोर देते रहे। गाँधीजी भी शिक्षा को ज्ञान–विज्ञान के विकास के साथ–साथ, नैतिकता और मानवता से जोड़कर देखते थे। उनकी स्पष्ट धारणा थी कि– ''सच्ची शिक्षा वही है, जो मनुष्य को सच्चा और अच्छा मनुष्य बनाये। उसके समग्र विकास में योगदान दे और उसे कर्त्तव्य–पालन के लिए प्रेरित करे। विद्या–प्राप्ति मानवता और नैतिकता की रक्षा से जुड़ी होनी चाहिए।'' मेरा मानना है कि जो अच्छा मनुष्य है; यदि वह हिन्दू है तो अच्छा हिन्दू होगा, यदि वह मुस्लिम है तो अच्छा मुस्लिम होगा, यदि अध्यापक है तो अच्छा अध्यापक होगा, यदि राजनेता है तो वह अच्छा राजनेता होगा, अर्थात् अच्छा मनुष्य समाज के हर क्षेत्र में अच्छा ही होगा।

आपके महाविद्यालय में आज आपके परम प्रेरणा–पुंज डॉ॰ नीलाम्बर चौधरी जी की प्रतिमा का अनावरण हुआ है। उनकी यह प्रतिमा आपके हृदय में शिक्षा की वह दीपशिखा बराबर प्रज्वलित रखेगी,

जिसके प्रकाश में आप देश और समाज के लिए निरंतर कुछ उत्कृष्ट करने के लिए तत्पर रहेंगे। नववर्ष दो दिन पूर्व प्रारंभ हुआ है। नया वर्ष आपके जीवन में नई खुशियाँ लाये, सुख, समृद्धि और सद्भावना से आप सबका जीवन परिपूर्ण हो, यह मेरी मंगलकामना है। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना